पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
2	सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन	1

संक्षिप्त भूमिका

- भारतीय कला के इतिहास में **गुप्त काल** के बाद का समय **मन्दिर वास्तुकला** की प्रगति का युग कहलाता है।
- दक्षिण में **पल्लव, चोल** तथा **होयसल** एवं पूर्व में **पाल, सैन** और **गंगा वंशों** ने इस प्रगति को सहेजा तथा इसे प्रोत्साहन दिया।
- **पल्लव** और **चालुक्य** उनकी मूर्तिकला के लिए याद किए जाते हैं जबकि **चोल** और **होयसल** मन्दिर वास्तु कला के लिए जाने जाते हैं।

2.1

अर्जुन का चिन्तन अथवा गंगावतरण

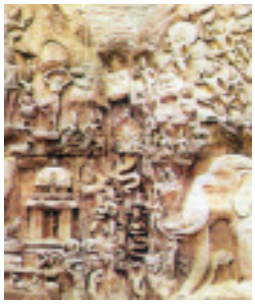

विवरण

शीर्षक : अर्जुन का चिन्तन अथवा गंगावतरण
शिल्पकार : अज्ञात
माध्यम : पत्थर
स्थान : मामल्लापुरम् (चैन्नई)
काल : पल्लव काल (सातवीं शताब्दी)
आकार : 91 फीट × 152 फीट

मूर्ति की विशेषतायें

- यह मूर्तिशिल्प दो शिलाखण्डों पर उभरा हुआ है।
- इस मूर्ति में विभिन्न आकार के मनुष्य व पशुओं को झुण्ड के रूप में उड़ते हुए दिखाया गया है।
- इन शिलाखण्डों के बीच में दरार है।
- पशु आकृतियां कलाकारों के गहन अवलोकन को दर्शाती हैं जैसे सोते हुए हाथी का बच्चा, बंदर की आकृति, नासिका को खुजलाता हिरण।

इस मूर्ति के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- इस उभरी हुई मूर्तिकला में **अर्जुन के चिन्तन** एवं योगियों को ध्यान मग्न अवस्था में दिखाया है तथा कुछ विद्वानों ने उसे **गंगावतरण** नाम दिया है जिसमें शंकर भगवान को पृथ्वी पर आती हुई गंगा को अपनी जटा में रोकते हुए दिखाया है।
- इस मूर्ति में गति तथा विशालता है।

स्व-मूल्यांकन

2.1.1 **अर्जुन का चिन्तन** का दूसरा नाम बताइये?

2.1.2 किस राजवंश में **अर्जुन का चिन्तन** की मूर्तिकला का निर्माण हुआ?

2.1.3 **अर्जुन का चिन्तन** में भीड़ में योगियों को किस अवस्था में दिखाया गया है।

उत्तर

2.1.1 गंगावतरण

2.1.2 पल्लव वंश

2.1.3 ध्यान मग्न अवस्था

2.2

गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण

विवरण

शीर्षक : गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण
शिल्पकार : अज्ञात
माध्यम : पत्थर
स्थान : बैलुर
काल : होयसल काल
आकार : 3 फीट

मूर्ति शिल्प की विशेषताएं

- यह मूर्ति होयसल काल की एक सर्वोत्तम कृति का उदाहरण है।
- समस्त घटना को अलग-अलग परतों में दिखाया गया है, तथा कृष्ण को मुख्य केन्द्र के रूप में दर्शाया गया है।
- कृष्ण को वीरोचित नायक के रूप में दर्शाया गया है पर उनकी मुद्रा तथा अंगों में लयात्मकता से संयोजन में कोमलता का अनुभव होता है।
- कृष्ण को घेरे हुए पशुओं का सजीव चित्रण किया गया है।

इस मूर्ति के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- मन्दिर वास्तुकला होयसल काल की एक महत्वपूर्ण गतिविधि थी।
- सुन्दर मूर्तिकला होयसला मूर्तिकला का अभिन्न अंग थी।
- दक्कन के प्रमुख राजवंश के नाम पर होयसला शैली का नाम रखा गया।
- बैलुर में होयसला के आदिकालीन मन्दिर मिले हैं।

स्व-मूल्यांकन

2.2.1 उस जगह का नाम बताएं जहां होयसला काल के मन्दिर पाए जाते हैं।

2.2.2 कृष्ण को किस आकार में दर्शाया गया है, बताएं।

2.1.3 क्लिष्ट और सूक्ष्म होयसला नक्काशी का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर

2.2.1 बैलुर

2.2.2 वीरोचित नायक के रूप में दर्शाया गया है।

2.1.3 गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण।

2.3

कोणार्क की सुरसुन्दरी

विवरण

शीर्षक : कोणार्क की सुरसुन्दरी

शिल्पकार : अज्ञात

माध्यम : पत्थर

स्थान : कोणार्क (ओड़िशा)

काल : गंगराजवंश (12वीं शताब्दी)

आकार : वास्तविक आकार से कुछ ज्यादा

मूर्ति की विशेषतायें

- कोणार्क मन्दिर में बनाई गई **सुरसुन्दरी** की हृष्ट-पुष्ट पुष्ट मूर्तियों को बहुत ही कोमलता से बनाया गया है।
- **सुरसुन्दरी** को एक ढोलक बजाते हुए दिखाया गया है।
- अपनी विशालता के साथ रमणीय **सुरसुन्दरी** को कोमलता से तराशे हुए आभूषण अपने वक्ष स्थल पर पहने हुए दर्शाया गया है।
- **सुरसुन्दरी** लयात्मक रूप में दर्शाई गई है।

इस मूर्ति के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **राजा नरसिंह देव प्रथम** द्वारा बनाया गया **कोणार्क का सूर्य मन्दिर** ओड़िशा वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण है।
- यह मन्दिर अपनी विशालकाय मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
- **सुरसुन्दरी** एक नारी संगीत समूह का अंग है और इनको मन्दिर में उपयुक्त स्थानों पर बनाया गया है।

स्व-मूल्यांकन

2.3.1 **सूर्य मन्दिर** किस राजा द्वारा बनाया गया और वे किस **राजवंश** के थे।

2.3.2 **कोणार्क के सूर्य मन्दिर** की मूर्तियों के आकार को स्पष्ट कीजिए।

2.3.3 **सुरसुन्दरी** किस वाद्य-यंत्र को बजाते हुए दर्शाई गई है।

उत्तर

2.3.1 राजा नरसिंह देव, गंगा राजवंश।

2.3.2 वास्तविक आकार से बड़ी।

2.3.3 सुर सुन्दरी ढोलक बजाते हुए दर्शाई गई है।

क्या आप जानते हैं?

- पल्लव अपने मूर्तिकला कार्य के लिए प्रसिद्ध थे।
- पल्लव वंश में मामल्लापुरम् तथा काँचीपुरम कला के मुख्य केन्द्र बने।
- महाबलिपुरम में **पंचरथ, अर्जुन का चिन्तन मण्डप** तथा उभरी हुई मूर्तिकला दर्शाई गई है।
- **पल्लवों** के पश्चात् दक्षिण भारतीय क्षेत्र में जिन राजवशों ने शासन किया उनमें **चालुक्य, चोल** तथा **होयसल** प्रमुख थे।
- पूर्वी भारत में **गंग राजवंश** प्रमुख और प्रतिष्ठित राजवंश हुए। इस राजवंश के शासकों ने ही ओड़िशा में स्थित कोणार्क में शानदार राजसी **सूर्य मन्दिर** का निर्माण कराया।